अध्याय 6: रीढ़ की हड्डी

विषय-सूची 6 प्रश्नावली · 15 प्रश्न

प्रश्नावली 6.1	मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय)	6 प्रश्न
प्रश्नावली 6.2	मेरी समझ मेरे विचार (लघु-उत्तरीय)	4 प्रश्न
प्रश्नावली 6.3	एकांकी की पड़ताल (संरचना-पहचान)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 6.4	तुलना और विचार	2 प्रश्न
प्रश्नावली 6.5	एकांकी का विस्तार	1 प्रश्न
प्रश्नावली 6.6	भाषा में मुहावरे (व्याकरण की बात)	1 प्रश्न

प्रश्नावली 6.1 — मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय)

प्रश्न 1

एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' का शीर्षक किसका प्रतीक है? (क) शरीर के एक आवश्यक अंग का (ख) व्यक्ति की ऊँचाई के आधार का (ग) आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का (घ) शारीरिक शक्ति और परिश्रम का

हल

सही उत्तर: (ग) आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का।

एकांकी में 'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक का दोहरा प्रतीकात्मक अर्थ है — एक शरीर की रीढ़ (बैकबोन) और दूसरा व्यक्ति का आत्म-सम्मान व नैतिक दृढ़ता।

उमा अंत में गोपालप्रसाद को कहती है — 'घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं — यानी बैकबोन, बैकबोन!' — यहाँ रीढ़ की हड्डी नैतिक साहस, आत्म-सम्मान और चारित्रिक दृढ़ता की प्रतीक है।

शंकर के पास शारीरिक रीढ़ है, परंतु चारित्रिक रीढ़ (आत्म-सम्मान) नहीं — इसी व्यंग्य को शीर्षक अभिव्यक्त करता है।

उत्तर: (ग) आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का — एकांकी का शीर्षक शारीरिक रीढ़ नहीं, बल्कि व्यक्ति के आत्म-सम्मान और नैतिक दृढ़ता का प्रतीक है।

प्रश्न 2

'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में किस पर व्यंग्य किया गया है? (क) पात्रों की निर्धनता और लाचारी पर (ख) पात्रों की भाषा और हास्य पर (ग) विवाह और अशिक्षा पर (घ) समाज की अनुचित मान्यताओं पर

हल

सही उत्तर: (घ) समाज की अनुचित मान्यताओं पर।

यह एकांकी भारतीय समाज की अनुचित मान्यताओं पर व्यंग्य करती है — जैसे विवाह में लड़की को कम पढ़ी-लिखी होना चाहिए, दहेज और लेन-देन, लड़कियों की शिक्षा को हीन दृष्टि से देखना आदि।

गोपालप्रसाद की सोच — 'लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात नहीं' — समाज की इसी रूढ़िवादी मान्यता का प्रतिनिधित्व करती है।

रामस्वरूप द्वारा उमा की शिक्षा छिपाना और उमा का साहसपूर्वक सच उजागर करना इसी सामाजिक विसंगति पर चोट करता है।

उत्तर: (घ) समाज की अनुचित मान्यताओं पर — विवाह में स्त्री-शिक्षा की अनदेखी, लेन-देन और रूढ़िवादी सोच पर व्यंग्य है।

प्रश्न 3

"घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं" यह वाक्य शंकर की किस छवि को उजागर करता है? (क) नैतिक साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता (ख) अनुभव और विवेक की कमी (ग) चारित्रिक दृढ़ता और शारीरिक दुर्बलता (घ) उदासीनता और एकाकीपन

हल

सही उत्तर: (क) नैतिक साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता।

शंकर पूरी एकांकी में निष्क्रिय, कायर और निर्व्यक्तित्व पात्र के रूप में चित्रित है।

वह लड़कियों के हॉस्टल के इर्द-गिर्द घूमता था और वहाँ से भगाया गया — यह उसकी चारित्रिक दुर्बलता दर्शाता है।

उमा के व्यंग्य वाक्य में 'रीढ़ की हड्डी' का अर्थ है — नैतिक साहस और दृढ़ चरित्र, जिसका शंकर में सर्वथा अभाव है।

उत्तर: (क) नैतिक साहस की कमी और चारित्रिक दुर्बलता — शंकर कायर, निर्व्यक्तित्व और चारित्रिक रूप से दुर्बल है।

प्रश्न 4

"जी हाँ, मैं कॉलेज में पढ़ी हूँ। मैंने बी.ए. पास किया है।" उमा की दृष्टि में शिक्षा प्राप्त करने का सही अर्थ है? (क) बड़ी-बड़ी डिग्री प्राप्त करना (ख) कॉलेज में पढ़ना और नौकरी पाना (ग) माता-पिता और पति को प्रसन्न रखना (घ) आत्मबल और स्वतंत्र विचार रखना

हल

सही उत्तर: (घ) आत्मबल और स्वतंत्र विचार रखना।

उमा बी.ए. पास होने की बात सगर्व कहती है और स्पष्ट करती है कि 'कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की।' उसके लिए शिक्षा का अर्थ केवल डिग्री या नौकरी नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, स्वतंत्र विचार और अन्याय के सामने खड़े होने का साहस है।

एकांकी के अंत में उमा का साहसपूर्ण संवाद इसी शिक्षा के सच्चे अर्थ की अभिव्यक्ति है।

उत्तर: (घ) आत्मबल और स्वतंत्र विचार रखना — उमा के लिए शिक्षा आत्मसम्मान और स्वतंत्र सोच का आधार है, केवल डिग्री नहीं।

प्रश्न 5

गोपालप्रसाद और रामस्वरूप में क्या-क्या समानताएँ हैं? (क) दोनों प्रगतिशील हैं और रूढ़ियों को नकारते हैं। (ख) दोनों दिखावे और परंपरा के शिकार हैं। (ग) दोनों शिक्षा और रूढ़ियों के समर्थक हैं। (घ) दोनों संगीत और स्वादिष्ट भोजन के प्रेमी हैं।

हल

सही उत्तर: (ख) दोनों दिखावे और परंपरा के शिकार हैं।
रामस्वरूप — उमा की शिक्षा छिपाते हैं, आधुनिकता का दिखावा करते हैं पर असल में रूढ़िवादी हैं।
गोपालप्रसाद — पढ़े-लिखे हैं पर लड़की को कम पढ़ा-लिखा चाहते हैं, खुद बेटे की कुरीतियाँ नहीं देखते।
दोनों समाज की परंपरा और दिखावे में जी रहे हैं — प्रगतिशील दिखते हैं पर मानसिकता रूढ़िवादी है।

उत्तर: (ख) दोनों दिखावे और परंपरा के शिकार हैं — दोनों बाहर से आधुनिक, भीतर से रूढ़िवादी हैं।

प्रश्न 6

इस एकांकी की संवाद शैली मुख्यतः कैसी है? (क) औपचारिक और शुष्क (ख) स्वाभाविक और व्यंग्यपूर्ण (ग) काव्यात्मक और प्रश्नात्मक (घ) भावुक और संक्षिप्त

हल

सही उत्तर: (ख) स्वाभाविक और व्यंग्यपूर्ण।
एकांकी के संवाद बोलचाल की सहज भाषा में हैं — 'हँ-हँ', 'जी हाँ साहब' जैसे स्वाभाविक संवाद पात्रों की वास्तविकता उजागर करते हैं।
व्यंग्य — गोपालप्रसाद की 'मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं' जैसी टिप्पणियाँ और उमा का 'बैकबोन' वाला तीखा व्यंग्य इसी शैली के उदाहरण हैं।
संवाद हास्य और व्यंग्य से भरे हैं जो पात्रों के चरित्र और सामाजिक विडंबना को उजागर करते हैं।

उत्तर: (ख) स्वाभाविक और व्यंग्यपूर्ण — संवाद सहज बोलचाल में हैं और पात्रों की रूढ़िवादिता पर तीखे व्यंग्य से भरे हैं।

प्रश्नावली 6.2 — मेरी समझ मेरे विचार (लघु-उत्तरीय)

प्रश्न 1

बाबू रामस्वरूप समाज में आधुनिक व्यवहार का दिखावा करते हैं, जबकि उनके विचार रूढ़िवादी हैं। इस अंतर्द्वंद्व के उदाहरण एकांकी में से खोजकर लिखिए। (संकेत– उमा के साथ उनका व्यवहार, विवाह के लिए दिखावे करना किंतु इन प्रयासों को छिपाने की चेष्टा करना आदि।)

हल

रामस्वरूप के आधुनिक दिखावे और रूढ़िवादी सोच के बीच का अंतर्द्वंद्व निम्नलिखित उदाहरणों में स्पष्ट होता है:
1. उमा की शिक्षा छिपाना — उन्होंने गोपालप्रसाद को बताया था कि उमा 'सिर्फ मैट्रिक तक पढ़ी है', जबकि उसने बी.ए. पास किया है। वे बेटी को पढ़ाते हैं पर विवाह के लिए उसकी शिक्षा को दोष मानते हैं।
2. उमा की चश्मे को छिपाने की कोशिश — जब उमा चश्मा पहने आती है तो रामस्वरूप सकपकाकर कहते हैं — 'आँखें दुखनी आ गई थीं इसलिए चश्मा लगाना पड़ रहा है', जबकि चश्मा पढ़ाई के कारण है।
3. उमा को तख्त पर अपने 'बाजे-वाजे के पास' बैठने का इशारा — बेटी को प्रदर्शन की वस्तु की तरह प्रस्तुत करना।
4. उमा के मूल्यांकन में रुकावट — जब उमा बोलना चाहती है तो रामस्वरूप उसे रोकते हैं; पर जब गोपालप्रसाद पूछते हैं तो कहते हैं 'जवाब दो उमा।'
रामस्वरूप बेटी को पढ़ाते हैं (आधुनिकता), पर उसे समान दृष्टि से नहीं देखते (रूढ़िवाद) — यही उनका अंतर्द्वंद्व है।

उत्तर: रामस्वरूप बेटी को पढ़ाते हैं पर विवाह के लिए उसकी शिक्षा छिपाते हैं, उसे चश्मे से ढकने की कोशिश करते हैं और उसे प्रदर्शन की वस्तु बनाते हैं — यह उनके आधुनिक दिखावे और रूढ़िवादी सोच का अंतर्द्वंद्व है।

प्रश्न 2

'रीढ़ की हड्डी' का संदर्भ दो अलग-अलग पात्रों के लिए भिन्न-भिन्न अर्थों में आया है, उनकी पहचान कीजिए और लिखिए।

हल

'रीढ़ की हड्डी' का प्रयोग एकांकी में दो अलग संदर्भों में आया है:
1. गोपालप्रसाद के संदर्भ में — गोपालप्रसाद स्वयं शंकर से कहते हैं कि 'लड़कों की रीढ़ की हड्डी और लड़कियों की रीढ़ की हड्डी में फर्क होता है।' यहाँ 'रीढ़ की हड्डी' का अर्थ शाब्दिक/शारीरिक है — एक पुरुषवादी दृष्टिकोण से लड़कों को श्रेष्ठ और मजबूत मानने की सोच।
2. उमा के संदर्भ में — एकांकी के अंत में उमा गोपालप्रसाद से कहती है — 'घर जाकर ज़रा यह पता लगाइएगा कि आपके लाडले बेटे के रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं — यानी बैकबोन, बैकबोन!' यहाँ 'रीढ़ की हड्डी' का अर्थ है — नैतिक साहस, आत्म-सम्मान और चारित्रिक दृढ़ता।
इस प्रकार गोपालप्रसाद के लिए यह शारीरिक श्रेष्ठता का प्रतीक है और उमा के लिए यह चारित्रिक दृढ़ता व आत्म-सम्मान का प्रतीक।

उत्तर: गोपालप्रसाद के लिए 'रीढ़ की हड्डी' शारीरिक (पुरुष श्रेष्ठता) का प्रतीक है, जबकि उमा के लिए यह नैतिक साहस और चारित्रिक दृढ़ता (बैकबोन) का प्रतीक है।

प्रश्न 3

"मेरी समझ में तो ये पढ़ाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं।" प्रेमा की इस सोच से उस समय की स्त्री-शिक्षा की स्थिति के विषय में क्या पता चलता है?

हल

प्रेमा का यह कथन 1939 के भारत में स्त्री-शिक्षा की दयनीय स्थिति का प्रतिबिंब है:

1. स्त्री-शिक्षा की उपेक्षा — प्रेमा जैसी माताएँ स्वयं अशिक्षित या अल्पशिक्षित हैं, इसलिए वे बेटी की शिक्षा को 'जंजाल' (झंझट) मानती हैं।
2. शिक्षा का विरोध — समाज में यह धारणा प्रचलित थी कि पढ़ी-लिखी लड़कियाँ विवाह के लिए उपयुक्त नहीं होतीं।
3. पितृसत्तात्मक मानसिकता — प्रेमा जैसी महिलाएँ भी पितृसत्तात्मक व्यवस्था का हिस्सा बन गई थीं और शिक्षा को महिला के विकास के लिए जरूरी नहीं मानती थीं।
4. सामाजिक दबाव — विवाह के लिए लड़कियों की शिक्षा को बाधा माना जाता था, इसलिए माताएँ भी बेटियों की शिक्षा के प्रति उदासीन थीं।

इस कथन से पता चलता है कि उस समय स्त्री-शिक्षा के प्रति गहरी उपेक्षा और पूर्वग्रह था।

उत्तर: प्रेमा की सोच दर्शाती है कि 1939 के समाज में स्त्री-शिक्षा को अनावश्यक 'जंजाल' माना जाता था — महिलाएँ स्वयं भी पितृसत्तात्मक व्यवस्था का हिस्सा बनकर बेटियों की शिक्षा को विवाह की बाधा समझती थीं।

प्रश्न 4

लेखक ने 'रीढ़ की हड्डी' शब्द को एकांकी के शीर्षक के रूप में क्यों चुना होगा? यदि आप इस एकांकी का दूसरा शीर्षक रखना चाहें, जो इसकी मुख्य बात को दर्शाए, तो वह क्या होगा और क्यों?

हल

'रीढ़ की हड्डी' शीर्षक चुनने के कारण:

1. दोहरा प्रतीक — शीर्षक एक साथ शारीरिक (रीढ़ = शरीर का आधार) और प्रतीकात्मक (नैतिक दृढ़ता = व्यक्तित्व का आधार) अर्थ रखता है।
2. व्यंग्य की धार — शंकर जैसे पुरुष के पास शारीरिक रीढ़ होते हुए भी नैतिक रीढ़ नहीं है — यह विरोधाभास ही एकांकी का केंद्रीय व्यंग्य है।
3. नारी सशक्तीकरण — उमा जैसी शिक्षित स्त्री 'रीढ़वाली' (आत्मबल संपन्न) है, जबकि परंपरावादी पुरुष 'रीढ़हीन' — यह विचार शीर्षक से ही अभिव्यक्त होता है।

वैकल्पिक शीर्षक: 'बैकबोन' या 'आत्मसम्मान की जीत' — क्योंकि एकांकी में उमा के आत्मसम्मान की जीत और शंकर/गोपालप्रसाद की रूढ़िवादी पराजय ही मुख्य संदेश है।

उत्तर: लेखक ने यह शीर्षक इसलिए चुना क्योंकि यह शारीरिक और चारित्रिक दृढ़ता का दोहरा व्यंग्यात्मक प्रतीक है। वैकल्पिक शीर्षक 'आत्मसम्मान की जीत' हो सकता है, जो उमा के साहस और रूढ़िवाद की पराजय को सीधे व्यक्त करे।

प्रश्नावली 6.3 — एकांकी की पड़ताल (संरचना-पहचान)

प्रश्न 1

आगे 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी से संबंधित कुछ बिंदु दिए गए हैं। एकांकी में से इन बिंदुओं से संबंधित एक-एक उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए— 1. एकांकी का नाम 2. लेखक का नाम 3. पात्र 4. परिवेश/देश-काल 5. रंग-निर्देश/मंच-निर्देश 6. संवाद-निर्देश 7. समस्या 8. संवाद 9. मुख्य विचार 10. समाधान/परिणाम

हल

1. एकांकी का नाम — रीढ़ की हड्डी
2. लेखक का नाम — जगदीशचंद्र माथुर
3. पात्र — उमा (लड़की), रामस्वरूप (लड़की का पिता), प्रेमा (लड़की की माँ), शंकर (लड़का), गोपालप्रसाद (लड़के का पिता), रतन (रामस्वरूप का घरेलू सहायक)
4. परिवेश/देश-काल — भारत, सन् 1939 का मध्यवर्गीय परिवार; एक मामूली तरह से सजे हुए कमरे में विवाह-दर्शन का दृश्य।
5. रंग-निर्देश/मंच-निर्देश — '(मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाजे से आते हुए जिन महाशय की पीठ नजर आ रही है, वे अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं।)'
6. संवाद-निर्देश — '(शंकर भी हँसता है, मगर गोपालप्रसाद गंभीर हो जाते हैं।)' — पात्र के भाव का निर्देश
7. समस्या — विवाह में लड़कियों की शिक्षा को छिपाना, स्त्री-शिक्षा के प्रति रूढ़िवादी सोच, और लड़की को वस्तु की तरह देखना।
8. संवाद — उमा : 'जब कुर्सी-मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी-मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीदार को दिखला देता है।'
9. मुख्य विचार — स्त्री-शिक्षा आत्मसम्मान और स्वतंत्र व्यक्तित्व का आधार है; रूढ़िवादी सोच के विरुद्ध शिक्षित नारी की आवाज़।
10. समाधान/परिणाम — उमा के साहसपूर्ण संवादों से गोपालप्रसाद और शंकर अपमानित होकर चले जाते हैं। रतन का 'बाबूजी, मक्खन!' कहना हास्य-व्यंग्य के साथ परदा गिराता है।

उत्तर: एकांकी की पड़ताल: (1) रीढ़ की हड्डी (2) जगदीशचंद्र माथुर (3) उमा, रामस्वरूप, प्रेमा, शंकर, गोपालप्रसाद, रतन (4) 1939, मध्यवर्गीय घर (5) 'मामूली सजा हुआ कमरा...' (6) '(शंकर भी हँसता है...)' (7) स्त्री-शिक्षा की उपेक्षा (8) उमा का कुर्सी-मेज वाला संवाद (9) शिक्षित नारी का आत्मसम्मान (10) गोपालप्रसाद-शंकर का लज्जित होकर जाना।

प्रश्नावली 6.4 — तुलना और विचार

प्रश्न 1

"गोपालप्रसाद : भला पूछिए इन अक्ल के ठेकेदारों से कि क्या लड़कों की पढ़ाई और लड़कियों की पढ़ाई एक बात है।" एकांकी में उन पंक्तियों को खोजिए जहाँ एकांकी के पात्रों के व्यवहार में लड़कियों तथा लड़कों के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टि अभिव्यक्त हुई है। अब यह भी लिखिए कि आप इस भिन्नता को किस प्रकार समझते हैं?

हल

एकांकी में लड़कों और लड़कियों के प्रति भिन्न दृष्टि दर्शाने वाली पंक्तियाँ:

1. गोपालप्रसाद — 'मर्दों का काम तो है ही पढ़ना और काबिल होना। अगर औरतें भी वही करने लगीं, अंग्रेजी अखबार पढ़ने लगीं... तब तो हो चुकी गृहस्थी।' — लड़कों की उच्च शिक्षा को आवश्यक और लड़कियों की उच्च शिक्षा को गृहस्थी के लिए खतरा माना गया।
2. गोपालप्रसाद — 'मोर के पंख होते हैं, मोरनी के नहीं; शेर के बाल होते हैं, शेरनी के नहीं।' — प्रकृति की उपमा देकर स्त्री-शिक्षा को अनावश्यक ठहराया।
3. रामस्वरूप ने गोपालप्रसाद को उमा की बी.ए. डिग्री छिपाई — लड़की की शिक्षा विवाह में बाधा मानी गई।
4. शंकर बी.ए., एम.ए. पढ़े हैं — लड़के की उच्च शिक्षा स्वाभाविक मानी गई।

इस भिन्नता को समझना: यह भिन्नता समाज की पितृसत्तात्मक व्यवस्था की उपज है जहाँ लड़की को केवल गृहकार्य, सिलाई, संगीत और आज्ञाकारिता के लिए तैयार किया जाता था। यह दृष्टिकोण न केवल अन्यायपूर्ण है, बल्कि समाज के आधे हिस्से (महिलाओं) की क्षमताओं को नष्ट करता है। उमा जैसी शिक्षित स्त्री का उभरना इसी संकुचित सोच की चुनौती है।

उत्तर: एकांकी में लड़कों की उच्च शिक्षा को आवश्यक और लड़कियों की शिक्षा को 'गृहस्थी के लिए खतरा' माना गया है — यह पितृसत्तात्मक सोच अन्यायपूर्ण और समाज-विकास विरोधी है।

प्रश्न 2

"मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का खयाल तो है। लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना मुँह छिपाकर भागे थे।" एकांकी में उमा अपने अधिकार और विचार खुलकर व्यक्त करती है। इससे उमा के व्यक्तित्व के विषय में क्या-क्या पता चलता है? आपके विचार से उसके व्यक्तित्व में ये विशेषताएँ कैसे आई होंगी? (संकेत– शिक्षा, परिवार का व्यवहार आदि)

हल

उमा के व्यक्तित्व की विशेषताएँ:

1. आत्मसम्मान — उमा कहती है 'मुझे अपनी इज्जत, अपने मान का खयाल तो है' — वह अपने सम्मान के प्रति सजग है।
2. साहस — एकांकी में पिता रामस्वरूप और बड़ों की उपस्थिति में भी उमा निडरता से सत्य बोलती है।
3. स्वतंत्र विचार — वह शंकर की होस्टल-काण्ड वाली बात निर्भीकता से उजागर करती है।
4. तीक्ष्ण बुद्धि — 'कुर्सी-मेज बिकती है' वाले संवाद से वह परंपरागत विवाह-व्यवस्था की कड़ी आलोचना करती है।

5. करुणा भी — व्यंग्य के बाद वह सहसा चुप हो जाती है और रो पड़ती है — वह कठोर नहीं, बल्कि संवेदनशील भी है।

ये विशेषताएँ कैसे आईं:

1. शिक्षा — बी.ए. की शिक्षा ने उसे स्वतंत्र सोच, आत्मविश्वास और ज्ञान दिया।
2. पिता रामस्वरूप का स्नेह — उन्होंने उसे पढ़ाया (भले ही दिखावे में वे उसकी शिक्षा छिपाते हैं)।
3. स्वयं की जागरूकता — उमा ने समझ लिया था कि समाज में स्त्री को 'वस्तु' की तरह देखा जाता है और इसके विरुद्ध उसने आवाज़ उठाने का संकल्प लिया।

उत्तर: उमा के व्यक्तित्व में आत्मसम्मान, निर्भीकता, स्वतंत्र विचार और करुणा है — ये गुण उसकी शिक्षा, पिता के स्नेह और स्वयं की सामाजिक जागरूकता से विकसित हुए।

प्रश्नावली 6.5 — एकांकी का विस्तार

प्रश्न 1

एकांकी के अंत में रतन कहता है— "बाबूजी, मक्खन..." और परदा गिर जाता है। लेखक ने इस संवाद से एकांकी का अंत क्यों किया होगा? (संकेत– हास्य, व्यंग्य, टिप्पणी आदि)

हल

रतन का 'बाबूजी, मक्खन!' कहकर परदा गिरना कई दृष्टियों से सार्थक है:

1. हास्य का पुट — पूरे नाटक में भावनात्मक और व्यंग्यात्मक तनाव के बाद रतन का यह सीधा-सादा संवाद दर्शक को हँसा देता है।
2. व्यंग्य — 'मक्खन' शब्द यहाँ दोहरे अर्थ में आया है — एक ओर शाब्दिक (खाने का मक्खन) और दूसरी ओर व्यंग्यार्थ (चापलूसी / मक्खनबाजी)। गोपालप्रसाद पूरी एकांकी में ऐसे व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं जो उनकी 'मक्खनबाजी' करे।
3. यथार्थ का संकेत — जब घर में इतनी बड़ी घटना हो गई, रामस्वरूप को धक्का लगा, उमा रो रही है — उसी समय रतन की 'मक्खन' वाली सामान्य माँग जीवन की विडंबना को उजागर करती है।
4. लेखक का शिल्प-कौशल — गंभीर सामाजिक विषय को हास्य-व्यंग्य के साथ समाप्त करना जगदीशचंद्र माथुर की एकांकी शैली की विशेषता है।

उत्तर: रतन का 'बाबूजी, मक्खन!' कहना हास्य, व्यंग्य और जीवन की विडंबना का प्रतीक है — गंभीर सामाजिक संघर्ष के बाद यह सामान्य माँग पाठक को हँसा देती है और 'मक्खनबाजी' पर व्यंग्य करती है।

प्रश्नावली 6.6 — भाषा में मुहावरे (व्याकरण की बात)

प्रश्न 1

निम्नलिखित वाक्यों में मुहावरों को पहचानकर रेखांकित कीजिए— 1. "उनके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह रतन आ रहा है— खाली हाथ।" 2. "लेकिन वह तुम्हारी लाडली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।" 3. "और तुम उसकी माँ, किस मर्ज की दवा हो?" 4. "तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रखा है।" 5. "मगर तुम तो अभी से सब-कुछ उगले देती हो।" 6. "यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे।" 7. "बाबू रामस्वरूप, आपने मेरी इज्जत उतारने के लिए मुझे यहाँ बुलाया था?" 8. "लेकिन इनसे पूछिए कि ये किस तरह अपना मुँह छिपाकर भागे थे।"

हल

1. भीगी बिल्ली की तरह — डरा हुआ, दब्बू; रतन डरते-डरते पीछे-पीछे आ रहा है।
2. मुँह फुलाए रहना — रूठ जाना, नाराज रहना; उमा नाराज होकर बैठी है।
3. किस मर्ज की दवा होना — किसी काम की न होना, बेकार; प्रेमा उमा को शांत करने में असमर्थ है।
4. सिर चढ़ाना — शेखी देना, अनुशासनहीन बना देना; रामस्वरूप का आरोप कि प्रेमा ने उमा को निरंकुश बना दिया।
5. सब-कुछ उगल देना — सारी बात कह देना, राज खोल देना; प्रेमा के रहस्य छिपाने में असमर्थ होने पर व्यंग्य।
6. काँटों में घसीटना — अनावश्यक झंझट में डालना; रामस्वरूप की शिकायत कि प्रेमा उन्हें परेशानी में डाल रही है।
7. इज्जत उतारना — अपमान करना, बेइज्जती करना; गोपालप्रसाद का रामस्वरूप पर आरोप।
8. मुँह छिपाकर भागना — शर्म से, लज्जित होकर भाग जाना; उमा का शंकर के होस्टल-काण्ड का उल्लेख।

उत्तर: मुहावरे: (1) भीगी बिल्ली की तरह=डरे हुए (2) मुँह फुलाए=रूठे (3) किस मर्ज की दवा=बेकार (4) सिर चढ़ाना=बेलगाम बनाना (5) सब उगल देना=सब बता देना (6) काँटों में घसीटना=झंझट में डालना (7) इज्जत उतारना=अपमान करना (8) मुँह छिपाकर भागना=शर्म से पलायन करना।